RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

ललित कला रत्न – छापाचित्रकार ''सोमनाथ होर''

[1]डॉ. चित्रलेखा सिंह; [2]सपना रल्हन

[1]डीन, फाइन आर्ट डिपार्टमेंट, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राज.)
[2]रिसर्च स्कॉलर, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राज.)

सोमनाथ होर का जन्म सन् 1921 में बंगला देश के चित्तागंगा नामक स्थान पर हुआ था। जब वह 13 साल के थे तब इनके पिता रेवती मोहन होर का स्वर्गवास हो गया तथा वह अपनी माँ के सम्पर्क में आकर समुदायिक पार्टी से जुड़ गये। उनकी बाल्यावस्था में असाधारण नहीं थी। बंगाल में अकाल के कारण युवक वामपंथी विचारधारा की तरफ मुड़ने लगे थे। सोमनाथ होर ने ग्राफिक कला की खोज के बाद अपनी मूल–अभिव्यक्ति को ग्रहण किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम से आहत सोमनाथ होर सन् 1943 के अकाल से जुड़ने के लिए अपने स्तर पर पीड़ितों की सहायता में जुटे थे। सोमनाथ पीड़ित की मदद के लिए पोस्टर बनाने लगे। इस प्रकार उन्होंने अपने आप को कला से जोड़ लिया और कला के प्रति निरन्तर उत्सुक होते चले गये।

सोमनाथ होर राजनीतिक अंगार में उलझ गये। यद्यपि एक सभ्य और संवेदनशील व्यवहार के व्यक्तिगत को राजनीतिक का कठोर व लड़खड़ाता जीवन कम ही रास आता है। अतः वह चित्रकला की तरफ वापस आ गये। 1950 में उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की। सोमनाथ होर ने अपने जीवन में काफी समय तक के उलझनों को चित्रकला, ड्राइंग छापाकला, के विभिन्न माध्यमों तथा मूर्तिकार के रूप मानव जाति के घायल तत्व–हार अपनी लम्बी साहित्य यात्रा में अनुसरण कर प्राप्त करने का प्रयास किया है। इसके अलावा भी कठोर निर्दयी विकास मानव अनुभव को क्रूरता और वास्तविकता की मदद से यह बात साक्षी है कि बम (गोला) के द्वारा जो कुर्बानी चितागंगा में हुई थी उसका प्रभाव उन पर तथा उनके कामों पर नजर आता है।

1947 में वुड इवग्रेविग किया, इन्होंने उस काम को टाईटल कोम्युनल हारमनी का नाम दिया जिसमें महात्मा गांधी से मिलने का पता लगाया था यह बहुत अच्छा कम्पोजीशन था इसमें सफेद लाइन में काला संदेश संचित किये गये थे। जो उन स्थानों को बता रहे थे जहाँ कि बहुत गम्भीर समस्यायें थी। दिसम्बर 1947 में इन्होंने एक शेयर कॉर्पोरेशन की माँग की जिसको तक्ष्य लेवहगा के नाम से जाना जाता है। जो बंगाल में स्थित था। सोमनाथ कुछ उत्तर बंगाल के जिलों से सम्बन्धित गाँवों में गये और वहाँ के लोगों के साथ रूके। जब वह कलकता लौटे तो उसके पास बहुत सारे रूक्रेचस थे जिसमें अलग–अलग झाँकियाँ थी। इनमें बुडकट का काम अलग ही दिखायी दे रहा था, उन्होंने वुडकट और लीनोकट का ज्ञान कुछ भी समय में अच्छी तरह से प्राप्त कर लिया।

अब रिपोर्ट सन् 1947 के सोमनाथ का एकेडमिक केरियर शुरू हुआ जो समुदायिक पार्टी से सम्बन्धित था। वह लगातार लीनोकट पोस्टर और सचित्र स्केचस में लगे रहे। जब 1950 में उनकी पढ़ाई पूरी हो गयी तब भी उन्होंने अध्ययन नहीं छोड़ा। उन्होंने पेंटिंग, ड्राईंग और प्रिंट मेकिंग में और भी अधिक मेहनत करके अपनी आशाओं को पूरा किया। सोमनाथ ने सन् 1951–1954 के समय में मोनोक्रोम प्रिन्ट निकाले जो धनी लोगों के लिए थे, उन्होंने इन चित्रों में काम करते हुए, औरतों, बच्चों और खेतों में लड़ते हुए घोड़ों के दर्शाया। उन्होंने लोगों को आपस में बातचीत करते हुए भी चित्रित किया। अपने पॉट्रेट्स में बढ़ा–चढ़ाकर परिवर्तन किये। चित्र उद्देश्य पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन चित्रों के बारे में पहले से ही विचार बना रखे थे। अपने चित्रों में ज्यादा से ज्यादा सफेद तथा काले रंग का प्रयोग किया है। इन कार्यों के लिये उन्हें बहुत सारी बधाईयाँ मिली।

सन् 1950 में उन्होंने अपनी मास्टरी पूरी की तथा बहुत सारी खोज तथा परीक्षण किये। उन्होंने 1947 में प्रिंट मेकिंग, बुड कटिंग, इन्ग्रेविंग और बुडकट का काम किया उन्हें अपने पहले लीनोकट के पोस्टर में डिक्टेनशन मिली। सन् 1952 में उन्होंने पहली बहुरंगी पेन्टिंग तैयार की। सन् 1955 से 1957 के समय में उनके जीवन में कुछ बदलाव आये वह नम्बर वन पर वुड एनग्रेविंग और वुडकट में पूर्ण थे तथा मोनोक्रोम में भी परफेक्ट थे। उन्होंने अपनी छवि 1943 के अनुभव से और भी ज्यादा पक्की की जब भी उन्हें लगा कि उसके विचारों की कुर्की हो रही है वह अपने मार्ग पर डटे रहे। अपनी स्मृति में 1943 के विचार एकत्रित कर लिये थे।

उन्होंने पीड़ित लोगों के विचारों को बहुत अच्छे तरह से समझने की कोशिश की और देखा कि किस प्रकार शोषक वर्ग गरीब लोगों का शोषण करता है। अपने काम में इस बात को मुख्य रूप से दिखायाा। उन्होंने दिखाया कि किस प्रकार एक छोटे से चेहरे पर बड़े दुख हैं। आपने दिखाया कि किस प्रकार इस तरह की चीज चिपकने जैसी होती है। अपने चित्रों में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लोगों को खाली कटोरा लिये दिखाया है। पीड़ित लोगों को हड़िडयों का ढांचा दिखाया है। खाल को सिकुड़ा हुआ दिखाया है। अपने चित्रों के द्वारा लोगों को आकर्षित किये है तथा सभी पर अपना प्रभाव डाला है। इन सभी ने सोमनाथ को अच्छी क्वालिटी के अच्छे चित्र जो कि परिस्थितियों को दर्शाने में मदद करते है। परन्तु परिस्थितियों में दूसरों के सुझावों को मानते हुए अपने विचार भी व्यक्त किये।

अपने चित्रों में बहुत ही अद्भुत छवियों को तात्विक रूप से व्यक्त करने की आवश्यकता समझी। यह सब करने के बाद वह इस स्थिति तक पहुँचे जब उन्होंने बहुभाषाओं का अध्ययन किया। इन चित्रों में उन्होंने देखा तथा दूरी के बीच अन्त सम्बन्ध को समझाया है। पिकासो के अन्तर्गत उन्होंने नयी रीति द्वारा धनफल के अन्तर्गत सामाजिक और मानव से सम्बन्धित रूचिकर चित्र बनाये।

सोमनाथ ने पहले भाषाओं का अध्ययन करके अपने उद्देश्य को निर्धारित किया। सोमनाथ ने 1954 के लम्बे समय में विधियों के साथ सामग्रियों सहित नये–नये प्रयोग किया। सोमनाथ ने प्रिंटमेकिंग, लीनोकट, बुडकट में मास्टरी की। इसके अलावा एचिंग तथा इनगेविंग ओर मैट्रिक्स में महारत हासिल की। इनमें बहुरंगी चित्र बनाये रिफिल प्रिंटिंग एटोनल पर आधारित थी। सोमनाथ ने टोटल वर्क की आवश्यकता अनुभव की। उन्होंने अपनी पहली काली और सफेद एचिंग 1954 में बनायी तथा 1956 के बीच सम्पन्न हुआ। जो कि प्रकृति पर आधारित था। इन्होंने पहली मास्टरी के बाद अद्भुत प्राकृतिक चित्र का प्रतिपादन किया जिसके तत्व दर्शाने लायक थे। क्योंकि सोमनाथ ने बिना किसी भी सहायता के खुद इन्टोग्लियों के प्रिंट का परिणाम सन् 1956 में लाया। इस प्रयास में सोमनाथ के दृष्टिकोण को बदला, कला एवं कल्प के सम्बन्ध को बताया। उन्होंने सबको प्रसन्न करने के लालच में मखमली साइनों का प्रयोग किया। वे लाइनें सीधी न थी।

जिसके कारण इनका प्रभाव अलग ही था। रेखाएं मन को मोहने वाली थी उनके कार्यों का आकार बहुत ही अच्छा था। सोमनाथ होर क अनुसार ''यह अत्यन्त वास्तविक और अवास्तविक दोनों हैं। न तो एक प्रेस और न ही प्लास्टर का सांचा इस प्रकार की विषयवस्तु उत्पन्न कर सकता हैं जैसे पेपरलुगदी छापा करते हैं।''

एक कलाकार की चेतना हाथी पर और उसकी अचेतना पर निर्भर करती है। सोमनाथ होर ने सिमेन्ट और प्लास्ट ब्लॉक तथा समाज की लुगदी के साथ–साथ नए परीक्षण किए है। इनके लिए सबसे पहले समतल जगह पर जिस प्रकार खेत में हल चलाते है उसी प्रकार उस पर त्रिांकन किया जाता है। इस प्रकार बनी समतल सतह से सीमेन्ट के घोल द्वारा उसका साँचा बनाया जाता है। सूखने के पश्चात् यह सीमेन्ट का साँचा ही प्लेट का काल करता है। इस प्लेट पर कच्चे पेपर की लुगटी की वह बिछा दी जाती है। अन्त में अनेक प्रकार के हस्तकौशल से छापा चित्रण बनाये जाते हैं। सन् 1957 में सोमनाथ ने रेखा से विवाह कर लिया तथा उन्होंने एक साथ सन् 1956, 1957 और 1958 में अपनी कलाकृतियाँ की प्रदर्शिनियाँ की। चित्रों के कला जगत में पहले ही स्थान बना चुके सन् 1958 में दिल्ली की तरफ प्रस्थान किया तब उसकी कला और जीवन में एक नये चरण की शुरूआत हुई। यहाँ उन्होंने दिल्ली पोलेटेक्निकल (अब ललित कला महाविद्यालय) के ललित कला विभाग में ग्राफिक इन्चार्ज का पद संभाला। उनके प्रयासों से महाविद्यालय ग्राफिक विभाग का विकास हुआ। निःसंदेह दिल्ली के छापा चित्रकारों की एक नई पौधा एक अत्यन्त उत्साह बढ़ाने वाले और स्वयं दर्द लेने वाले व्यक्ति के निर्देशन में प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर रही थी। सोमनाथ को उनकी चित्रकला के लिए अधिक समय ने मिल पाने के कारण होर ने सन् 1967 में दिल्ली ललित कला महाविद्यालय से त्याग पत्र दे दिया। वह अपनी कार्य प्रगति से सन्तुष्ट नहीं थे या शायद वह एक नई ताजगी या बदलाव चाहते थे। अतः कुछ समय पश्चात् वे शान्ति निकेतन चले गये और अभी तक वही रह कर कार्य कर रहे हैं।

इनके प्रसिद्ध चित्र नाईट मीटिंग, चाय की दुकान, गली का दृश्य, नाईट मिटिंग, स्वप्न, एक सफेद गुलाब का जन्म, इन द पोंड, चाईल्ड, वुन्ड्स इत्यादि ने वर्ष 2004 में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के 50वीं वर्ष (स्वर्ण जयंती) के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा ललित कला रत्न की उपाधि से विभूषित किया।

सन्दर्भ :–

1. The Graphic Art of some Nath Hore – Jaya Appas a why contemporary-II
2. Contemporang Graphics in India-Kali Biswas : Contemporarg – 18
3. Indian printmaking today 1985.
4. Marg 4, Vol. 19.
5. Lalit Kala Contemporary – 18
6. भारतीय छायाचित्र कला, आदि से आधुनिक काल तक – डॉ. सुनील कुमार